NAME:- SAGEER AHMAD

SUPERVISOR:- DR. AJAY KUMAR NAURIYA

TOPIC:- HINDI UPANYASON MEIN VAISHVIKARAN KE VARCHASV AUR PRATIRODH KE SWAR (2000-2015)

DEPARTMENT:- HINDI

VIVA VOICE DATE:- 20/05/2022

संक्षिप्त शोध-सार

हिंदी गद्य साहित्य की विधाओं में उपन्यास अपेक्षाकृत नवीन विधा है। अधिकांश साहित्येतिहासकारों ने इसका जन्म हिंदी गद्य के प्रथम उत्थान अर्थात भारतेंदु युग से माना है। लगभग देखा जाए तो इस विधा पर 20वीं सदी के पांचवें-छठे दशक से निरंतर शोध कार्य हो रहे हैं। साथ ही साहित्येतिहासकारों द्वारा समय-समय पर इसके स्वरूप, विश्लेषण विधागत विकास के अंतर्गत अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष को लेकर कई मौलिक स्थापनाएँ भी स्थापित की गई हैं। चूंकि उपन्यास सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई विधा है। इसकी स्थापनाओं में निरंतर परिवेशगत आधार पर नए-नए विश्लेषण एवं स्थापनाएँ भी जुड़ती चली गई हैं। इसका महत्वपूर्ण उदाहरण हम अपने शोध केंद्रित उपन्यासों में देख सकते हैं। 1991 की आर्थिक उदारीकरण के बाद जिस तरह से व्यापक परिवर्तन हुआ है, इस दौर के उपन्यासों और आलोचनात्मक ग्रंथों में देखा जा सकता है। पूर्ववर्ती उपन्यास जहाँ सामाजिक सुधार और धर्म सुधार आदि तमाम बिंदुओं को लेकर बात करते थे, वहीं इस दौर के उपन्यासों में फैलते वैश्विक कल्चर की पड़ताल सामाजिक स्तर पर दिखती है। जो सामाजिक बदलाओं को रेखांकित करते हुए तमाम

सामाजिक प्रश्नों जैसे- नारी स्वातंत्र्य, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श बढ़ते निजीकरण के कारण रोजगार का दबाव, समाज में पनपती आर्थिक विषमता, तीव्र शहरीकरण एवं मध्यम वर्गीय समाज की चिंता आदि इस दौर के उपन्यासों में देखा जा सकता है। इस दौर के उपन्यासों में आर्थिक विषमता किस कदर हावी है उसकी चिंता निरंतर हमें देखने को मिलती है। साथ ही बढ़ते निजीकरण से बढ़ता वैदेशिक पलायन तथा बच्चों के बूढ़े मां-बाप की चिंता भी देखने को मिलती है। विज्ञापनी संस्कृति द्वारा जिस प्रकार हमारा अनुकूलन किया जा रहा है इस दौर के उपन्यासों में देखने को मिलता है। वैश्वीकरण का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक दृष्टि से हमारे ऊपर किस प्रकार प्रभाव डाला है उसकी चिंता इस दौर के उपन्यासकारों ने बड़ी संजीदगी से उकेरा है।